IJAER/ June-July 2012 /Volume-1/Issue-3/Article No-22/ 308-310 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

मुगल शासक एवं भारतीय संस्कृति

डॉ० धीरेन्द्र कुमार शर्मा
शोध निर्देशिक
हिन्दी विभाग
सी० एम० जे० विश्वविद्यालय
राय-भोई, जोरबाट
मेघालय।

हरी निवास
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
सी० एम० जे०विश्वविद्यालय
राय-भोई, जोरबाट
मेघालय।

बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजके बाबरी' में भारतीय मुसलमानों को हिन्दुस्तानी कहकर सम्बोधित किया है। मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद उसके प्रशासन के क्षेत्र में अधिकांश हिन्दुओं को उसी पद पर रहने दिया। चंदेरी विजय के बाद मेदिनी राय की दो राजकुमारियों की शादी मिर्जा कामरान तथा हुमायूँ से करके अपनी उदारता का परिचय दिया और अकबर की राजपूत नीति की पृष्ठभूमि तैयार की।

अपने उत्तराधिकारी हुमायूँ को सुझाव देते हुए बाबर ने कहा था कि भारतवर्ष में अनेक धर्मानुयायी रहते हैं। ऐसी परिस्थिति में तुम्हारा मस्तिष्क धार्मिक भावनाओं से प्रभावित न हो। तुम सभी धर्मों के प्रति सहानुभूति रखकर अपनी सम्पूर्ण प्रजा के लिए यथोचित न्याय करना। गायों का वध न करके हिन्दुओं की सहानुभूति प्राप्त करना। मन्दिरों को ध्वस्त न करके हिन्दुओं की कृतज्ञता को प्राप्त करने का प्रयास करना और साम्राज्य में शान्ति रखना। हिन्दुओं के दमन की अपेक्षा प्रेम की तलवार से इस्लाम धर्म का प्रचार करना। शिया और सुन्नी के मतभेदों पर कभी ध्यान न देना क्योंकि इससे इस्लाम की शक्ति क्षीण होगी। प्रशासन तथा राजनीति को धर्म के अवगुणों से बचाना। इस प्रकार बाबर प्रथम मुगल सम्राट था, जिसने अच्छे हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों का बीजारोपण किया।

हुमायूँ ने आजन्म अपने पिता के सुझावों का पालने किया तथा उसके आदर्शों का अनुकरण किया। हिन्दुओं के प्रति उसके हृदय में विशेष स्थान था। चौसा के युद्ध में एक हिन्दू भिश्ती ने उसकी प्राण रक्षा की। कृतज्ञता में एक दिन के लिए सम्राट ने उसे राजगद्दी पर बिठाया। चौसा से भागते हुए गोहरा के हिन्दू राजा ने उसकी सहायता की थी। मालवा अभियान के समय मंझू के सुझाव पर उसने हिन्दुओं की हत्या बन्द कर दी। राजा मालदेव ने उसे सहायता का आश्वासन दिया। अर्सकीन तथा जेम्स टाड के अनुसार हुमायूँ ने मेवाड़ की रानी कर्णवती की राखी स्वीकार कर सच्चे भाई के रूप में रानी की सहायता करने के लिए प्रस्थान किया। किन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों के परिणामस्वरूप वह उचित समय पर सहायता न कर सका। अमरकोट के शासक ने उसे अपने यहाँ शरण दी। यहीं पर राजकुमार अकबर का जन्म हुआ। इन परिस्थितियों और घटनाओं के परिणामस्वरूप उसके हृदय में हिन्दुओं के प्रति सहानुभूति थी। अतः सम्राट ने हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध को अच्छा बनाने का सफल प्रयास किया।

शेरशाह ने अपनी शासन नीति में हिन्दू मुसलमानों को समान रूप से सुविधायें प्रदान की। उसने दोनों सम्प्रदायों के लिए अलग-अलग सरायों की व्यवस्था की। टोडरमल तथा बरमजीद गौड की नियुक्ति करके हिन्दू मुस्लिम समन्वय का एक उदाहरण पेश किया। उसके उत्तराधिकारी मुहम्मद आदिल शाह ने राजस्थान में रेवाड़ी के घूसर बनिया हेमू को प्रधान सेनापति के पद पर नियुक्ति प्रदान की।

मुगल सम्राट अकबर एक उदारवादी शासक था। वह भारतवर्ष को अपने मातृभूमि तथा हिन्दू, मुस्लिम सभी को अपनी प्रजा समझकर समान रूप से सुविधा प्रदान करना चाहता था। डॉ० मुहम्मद यासीन के अनुसार, अकबर का मुख्य उद्देश्य मुस्लिम सम्प्रदाय को भारतीय बनाकर राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक रंगमंच पर एकता प्रदान करना था। हिन्दू मुस्लिम असमानता को दूर करने के लिए १५६२ में आगरा के शासक भारमल की राजकुमारी तथा जैसलमेर के शासक मोटा राजा जयसिंह की पुत्री की शादी करके हिन्दू मुस्लिम सम्बन्ध की सराहनीय पृष्ठभूमि तैयार की। सम्राट अकबर ने राजकुमार सलीम का वैवाहिक सम्बन्ध भगवानदास की पुत्री तथा मानसिंह की बहन से १५८४ में सम्पन्न कराकर अपने उत्तराधिकारी के भी दृष्टिकोण में परिवर्तन करने का सफल प्रयास किया। राजा भगवान दास, मानसिंह, टोडरमल तथा बीरबल को उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्त करके अपनी सौहार्द्रता तथा उदारवादी नीति का परिचय दिया। राजपूत नीति के अर्न्तगत रणथम्भौर के राजा सूरजन हाडा को विशेष सुविधायें प्रदान की।

उसकी सम्पूर्ण प्रजा धर्म के नाम पर अनेक वर्गों में विभक्त थी। अतः वह दीन-ए-इलाही के माध्यम से सम्पूर्ण प्रजा को एकता के सूत्र में बॉधना चाहता था। अकबर स्वयं सूर्य तथा अग्नि की उपासना करता था। हिन्दुओं की भॉति मस्तक पर तिलक लगाता था। सम्राट अकबर रक्षा बन्धन, दीवाली, दशहरा तथा होली का त्यौहार हिन्दुओं की भॉति मनाता था। बदायूंनी तथा ईसाई पादरियों के अनुसार उसने गौवध तथा मांसाहार पर प्रतिबन्ध लगाकर हिन्दुओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण नीति का परिचय दिया। साहित्य के क्षेत्र में उसने अथर्ववेद, महाभारत तथा रामायण का अनुवाद फारसी में कराया। यही नहीं उसे लीलावती नामक गणित की पुस्तक का अनुवाद फारसी में कराकर हिन्दू साहित्य के प्रति सौहार्द्रपूर्णता का परिचय दिया। वास्तुकला, चित्रकला पर तो हिन्दुओं और मुसलमानों का सहयोग स्पष्ट रूप में दिखाई देता हैं। इस प्रकार सम्राट अकबर ने हिन्दू एवं मुसलमानों को राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में समान अधिकार एवं सुविधायें प्रदान कर दोनों सम्प्रदायों के बीच आपसी सौहार्द्र को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाई और निश्चित रूप से वह इसमें सफल रहा।

मुगल सम्राट जहॉगीर का दृष्टिकोण हिन्दुओं के प्रति अकबर की अपेक्षा में कम उदारवादी था, लेकिन वह स्वयं रक्षाबन्धन, दीवाली आदि त्यौहारों में भाग लेता था। मेवाड़ के राणा कर्णसिंह तथा अमरसिंह के साथ उसने सहानुभूतिपूर्ण नीति अपनाई। मानसिंह को प्रशासनिक एवं सैनिक पदों पर विभूषित किया। जहॉगीर ने हिन्दुओं की स्थिति को हानि पहुॅचाए बिना इस्लाम के हित में कार्य किया। उसने हिन्दुओं को तीर्थ यात्रा और नये मन्दिरों के निर्माण की अनुमति देने में अपने पिता की नीति का अनुसरण किया।

शाहजहॉ का शासन काल रूढ़िवादिता तथा धार्मिक कट्टरवाद का समय माना जाता है। वादशाह के लेखक के अनुसार शाहजहॉ ने अनेक हिन्दू मन्दिरों को ध्वस्त कराकर अपनी रूढ़िवादी धार्मिक नीति का परिचय दिया। केवल बनारस में ७२ मन्दिरों को ध्वस्त करा दिया। जयसिंह तथा जसवन्त सिंह का राज्य प्रशासन में स्थान देने के बावजूद भी धार्मिक कट्टरवाद का परित्याग नहीं किया। शाहजहॉ ने हिन्दुओं पर तीर्थ कर फिर से लगा दिया। इस आर्थिक बोझ के कारण बहुत से हिन्दू जो धार्मिक कार्य करना चाहते थे, उन्हें दिक्कतें आ गयी। ऐसा उल्लेख मिलता है कि बनारस के एक विद्वान कविन्द्राचार्य के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल सम्राट से मिला, जिनके अनुरोध पर शाहजहॉ ने यह कर समाप्त कर दिया। ऐसा माना जाता है कि अपने पुत्र दारा के विचारों से प्रभावित होकर शाहजहॉ ने अपनी धार्मिक कट्टरवाद की नीति का परित्याग कर दिया। दारा के प्रभाव के कारण ही १६४७ ई० के बाद बहुत से ध्वस्त हुए मन्दिरों को फिर से निर्माण करने का अधिकार हिन्दुओं को प्राप्त हुआ।

हिन्दू मुस्लिम सम्प्रदायों को समीप लाने में राजकुमार दारा शिकोह का प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है। अपने जीवन काल में उसने हिन्दू धर्म, दर्शन का अध्ययन किया। रामायण, गीता तथा उपनिषद का अनुवाद फारसी भाषा में कराया। मुहम्मद काजिम के अनुसार वह ब्राह्मणों के समाज में रहता था, योगी, साधु तथा सन्यासियों के साथ घूमता था और उन्हें अपना गुरू मानता था। वह वेद को ईश्वर का शब्द मानता था। वह अल्लाह के पवित्र नाम के स्थान पर प्रभु का स्मरण करता था। उसने अपनी अंगूठी पर हिन्दी तथा संस्कृत के शब्दों को खुदवाया था। टाइटस के अनुसार, यदि उसकी हत्या नहीं होती और मुगल साम्राज्य की गद्दी प्राप्त हुई होती तो इतिहास का कुछ और ही स्वरूप होता।

सम्राट औरंगजेब ने हिन्दुओं के प्रति उदार नीति नहीं अपनाई। उसके पूर्ववर्ती मुगल सम्राटों की नीतियों पर हिन्दू राजकुमारियों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। परन्तु औरंगजेब के हरम में सिर्फ दो हिन्दू रानियॉ थी और उनका प्रभाव सम्राट पर नगण्य था। औरंगजेब ने हिन्दुओं के प्रति रूढ़िवादी तथा धार्मिक कट्टरता की नीति को अपनाया। १६६९ ई० में मथुरा, बनारस, अयोध्या में अनेक हिन्दू मन्दिरों को ध्वस्त कराकर उसने मस्जिदों का निर्माण कराया। मुहम्मद साकी के अनुसार उसने इस्लाम की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः बढ़ाया। जोधपुर, चित्तौड़गढ़ तथा आमेर में अनेक मन्दिरों को गिरवाया। अमरोहा तथा सम्भल की मस्जिदों में आज भी हिन्दू मन्दिरों का अवशेष दिखाई देते हैं।

औरंगजेब ने मुस्लिम कानून के अनुसार कर निर्धारित किया तथा हिन्दुओं पर जजिया कर पुनः लगाया। उसने धर्म परिवर्तन के लिए हिन्दुओं को धन तथा पद का प्रलोभन दिया। आगरा के पास अनेक राजपूतों का धर्म परिवर्तन कराया। उसकी शासन नीति में अच्छे हिन्दु मुस्लिम सम्बन्ध की कोई सम्भावना नहीं थी। धर्म परिवर्तन हिन्दुओं को वह स्वयं कलमा पढ़ाता थ और उन्हें खिलअत तथा अन्य उपहारों से विभूषित करता था।

इस प्रकार हम देखते है कि मुगल काल में एक दो सम्राटों को धार्मिक कट्टरवादी नीति के बावजूद हिन्दु मुस्लिम सम्बन्ध अच्छा बना रहा। सम्राट अकबर ने दोनों सम्प्रदायों को सामाजिक दृष्टि से एक साथ लाने का प्रयास किया, जिसमें वह काफी हद तक सफल रहा। मुसलमान अमीर हिन्दु राजाओं के साथ त्यौहारों में भाग लेते थे। यहॉ तक कि औरंगजेब के शासनकाल में भी बहादुर खॉ होली के त्यौहार पर राजा

सुभान सिंह, राय सिंह राठौर, राजा अनूप सिंह और राजा मोखत सिंह चंदावत के यहाँ जाता था। मीर हसन तथा मीर मुहर्सन बड़ी श्रद्धा के साथ हिन्दू त्यौहारों में भाग लेते थे, तथा हिन्दू राजा तथा अमीर उन्हें प्रीतिभोज पर आमन्त्रित करते थे। सर यदुनाथ सरकार के अनुसार हिन्दू मुस्लिम सम्बन्ध भारतवर्ष के लिए लाभदायक सिद्ध हुए। भारत में स्थायी शान्ति, रीति-रिवाज, साहित्य एवं कला के क्षेत्र में विचारों के आदान-प्रदान से एक नवीन संस्कृति का जन्म हुआ। ऐतिहासिक साहित्य का विकास भी हिन्दू मुस्लिम सम्बन्धों का ही परिणाम था।

सन्दर्भग्रन्थ

1- मुखर्जी हिमांशु भूषण एजूकेशन फॉर फुलनैस, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली-१९६२।

2- मुखर्जी आर० के० 'एनसियेन्ट इण्डियन एजूकेशन' मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लि० द्वितीय संस्करण-१९५०।

3- निवलैट एम० आर० 'एजूकेशन एण्ड दा मॉडर्न माईण्ड' फेवर एण्ड फेवर, प्रथम संस्करण-१९५४।

4- रीड़ ए०एल० फिलॉसफी एण्ड एजूकेशन, जिमान, लन्दन, द्वितीय संस्करण-१९६२।

5- थ्री डेकेड्स ऑफ आई०सी०डी०एस०- एन एप्रैजल बाई एन०आई०पी०सी०सी०डी० ;२००६द्ध नई दिल्ली।